

पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल पृथ्वी के केंद्र में रहे गरम लावा के कारण होता है। हम जानते हैं कि कोई भी ऊष्मा का स्वाभाविक प्रवाह उच्च ताप से निम्न ताप की ओर होता है। गरम पदार्थ ऊष्मा देता है और ठंडा पदार्थ ऊष्मा अपनी ओर खींचता है। और हम पॉजिटिव चार्ज और निगेटिव चार्ज का प्रवाह देखे तो ऐसे ही होता है। पॉजिटिव चार्ज का प्रवाह निगेटिव चार्ज की ओर होता है। पॉजिटिव चार्ज बाहर की ओर फैलता है और निगेटिव चार्ज पॉजिटिव चार्ज को अपनी ओर आकर्षित करता है। इससे हम एक बात कह सकते हैं कि जैसे पॉजिटिव चार्ज और निगेटिव चार्ज का वहन होता है। वैसे ही ऊष्मा का वहन होता है। तो इससे हम ए कह सकते हैं कि पृथ्वी के केंद्र में रहे लावा गरम होने कारण पॉजिटिव चार्ज की तरह व्यवहार करता है और पृथ्वी की तमाम चीजे (वातावरण सहित) निगेटिव चार्ज की तरह व्यवहार करती हैं। और इसी कारण वो पृथ्वी से जुड़ी हुई रहती है तथा पृथ्वी अपनी ओर आकर्षित करती है।

हम किसी भी पदार्थ को जब ऊष्मा देते हैं तब सारी ऊष्मा तो अपनी अंदर नहीं खींच लेता कुछ ऊर्जा खींचता है बाकि की ऊर्जा वो बाहर की ओर फेक देता है मतलब की वो भी गरम होता है। और इसी कारण वह पदार्थ भी पॉजिटिव चार्ज की तरह व्यवहार करेगा। इसी कारण जो ऊष्मा की बहोत कम असर होती हो तभी ग्रेविटी का असर होता है। अन्यथा उन दोनों पदार्थ के बीच में अपकर्षण होगा या कोई असर नहीं होगा। और दूसरी बात कि ए असर बनता है। मूलभूत रूप से परमाणु में नहीं होता है। इसीलिए हम ये कह सकते हैं कि ये नोन पोलार मोलेक्यूल की तरह व्यवहार करेगा। और पृथ्वी के केंद्र में जो लावा है वो बिल्कुल कम असर होने के कारण उसका असर हर एक पदार्थ पे होता है। नॉन पोलर बॉंड की तरह मतलब कोई भी पदार्थ जब पृथ्वी के साथ जुड़ा हुआ होता है उसमें नीचे की तरफ पॉजिटिव चार्ज तथा ऊपर की तरफ निगेटिव चार्ज अंकित होता है। और वो स्थिर अवस्था में होता है तब जैसे हम दो चुंबक को जोड़ते हैं तब एक किनारे पे नॉर्थ पॉल और दूसरे किनारे पर साऊथ पॉल होता है उसी तरह पृथ्वी के साथ जुड़ा हुआ पदार्थ का नीचे की तरफ पॉजिटिव चार्ज तथा ऊपर की तरफ निगेटिव चार्ज अंकित होता है।

ठोस पदार्थ में गुरुत्वाकर्षण बल का असर ज्यादा क्यों होता है ?

ठोस पदार्थ में गति और ग्रेविटी दोनों जमा होती है। मान लेते हैं कोई व्यक्ति दौड़ रहा है तो उस व्यक्ति में लगातार गति जमा होती है। जब को व्यक्ति अचानक रुक जाता है तब भी उस व्यक्ति में गति होती है और इसलिए वो व्यक्ति गिर जाता है। उसी तरह से उस व्यक्ति में ग्रेविटी जमा होती है। और जो गेस अवस्था में जो अनु होते हैं। उसमें ग्रेविटी और गति दोनों तुरंत बाहर हो जाती है। मतलब गेस अवस्था में रहे अणु पर ग्रेविटी की असर उतनी ही होती है जितनी ठोस पदार्थ में असर होती है लेकिन गेस अवस्था में रहे अणु पर आसपास के अणुओं पर ज्यादा असर होने की वजह से गति अथवा ग्रेविटी की असर तुरंत असर खतम हो जाता है। इसीलिए ठोस पदार्थ पे ग्रेविटी की असर ज्यादा लगती है।

गुरुत्वाकर्षण बल की असर पृथ्वी की सतह के 90° के कोण पे क्यों होती है ?

हम जानते हैं कि किसी भी गोलाकार चीज के केंद्र में कोई पॉजिटिव चार्ज हो तो उसका असर उस पदार्थ की सतह के 90° के कोण पे होता है। असल में कोई भी चार्ज गोलाकार असर होती है लेकिन पास में ही पॉजिटिव चार्ज होने की वजह से दोनों चार्ज एक दुसरे को दूर धकेलते हैं इसीलिए वो चार्ज गोलाकार ना जाते हुए सीधा गति करता है जो सतह के 90° का कोण बनता हो। और इसीलिए पदार्थ पे ग्रेविटी की असर ऊपर से नीचे की ओर होती है।

गरम गेस ऊपर की तरफ क्यों जाती है ???

गेस अवस्था में रहे अणुओं में थोड़ी सी ऊर्जा अथवा पॉजिटिव चार्ज बाहर कि तरफ फ्लो होता है और उसमें जो इलेक्ट्रॉन होते हैं। वो अपने अणु का पॉजिटिव चार्ज को तो शोषित करता है साथ में अपने आसपास रहे अणुओं का भी थोड़ा सा पॉजिटिव चार्ज शोषित करता है। पक्का तो नी कह सकता कितना लेकिन अंदाजित रूप से मान ले कि गेस अवस्था में रहे अणु के इलेक्ट्रॉन 95% जितना अपने अणु में रहे प्रोटॉन का चार्ज शोषित करता है बाकी 5% चार्ज अपने आसपास रहे अणु का पॉजिटिव चार्ज शोषित करता है। पॉजिटिव चार्ज का फ्लो होने की वजह से वो अणु एक दूसरे से पुरी तरह से जुड़े हुए भी नहीं होते तथा इलेक्ट्रॉन के द्वारा आसपास के मोलिक्यूल का नेगेटिव चार्ज शोषित करने की वजह से खींचाव भी ज्यादा होता है जिसे हम वान डर वालस फोर्स के नाम से जानते हैं। अब जब हम किसी भी गेस अवस्था में रहे अणुओं को ऊष्मा ऊर्जा देते हैं तब उसमें पॉजिटिव चार्ज का फ्लो बढ़ जाता है जिसके कारण उस गेस के आसपास के अणु के बीच में अपकर्षण होता है जिसके कारण गरम गेस दूर जाती है। पृथ्वी की ग्रेविटी भी पॉजिटिव चार्ज फैलने की वजह से होती है इसलिए पृथ्वी की ग्रेविटी के साथ भी अपकर्षण होता है और गरम गेस जो है वो ऊपर की ओर गति करती है

सवाल आता है कि ठोस पदार्थ को गरम करते हैं तब वो क्यों नहीं ऊपर की ओर गति करते ??

ठोस अवस्था में रहे पदार्थ को जब हम ऊष्मा देते हैं तब उस पदार्थ में ऊष्मा को शोषित करता है और

फिर वो पदार्थ ऊष्मा को बाहर की तरफ फैलती है । जब ठोस पदार्थ के हर एक अणु में से ऊष्मा फ्लो होने लगती हैं तब उस पदार्थ ठोस में से प्रवाही में बदलने लगता है लेकिन लेकिन उसमें तब भी पॉजिटिव चार्ज शोखने की क्षमता होती है। उसी कारण वो गैविटी की असर को विरूद में नहीं बदलता और उसमे गेस अवस्था में रहे अणु की तरह पृथ्वी से दूर नहीं जाता।

इस थियोरी को साबित कर सकते है हम

कोई भी गोला बनाए हम पृथ्वी जैसा और उसके केंद्र में लावा जैसी गरम चीज भर दे और उसके इर्दगिर्द का आकर्षण की तपास करके या उस गोले को जहा हम सेटेलाइट रखते है उस जगह रख कर उसके पास में कोई पदार्थ रख दे जो मून की तरह हो तो वो पदार्थ मून कि तरह उस गोले कि परिक्रमा करेगा ।